

der Fortgang, der Verlauf des Gedächtnisses R. 1, 3, 2. — 2) das Gelangen zu, Erreichen: स्वर्गस्य लोकस्य गत्यै ÇAT. Br. 9, 4, 4, 15. 10. यदि पुंसो गति-र्वहन्स्वर्गचित्रोपपद्यते । अप्यन्योऽन्यं प्रवर्तते (स्त्रियः) MBh. 13, 2223. भो-गैश्वर्यगतिः BHAG. 2, 43. — 3) Weg, Bahn, = अद्यन् H. an. = मार्ग und सरणी MED. = गतव्यदेशः VAIG. BHAG. 8, 26. जगामात्मगतं प्रभुः R. 1, 76, 24. का गतिं वक्ष्य गमिष्यामि सवान्धवः BRĀHMAN. 1, 35. die Bahn der Gestirne: अलक्ष्मि हि यथा लोकैर्व्योम्नि चन्द्रार्कयोर्गतिः । नन्त्राणां प्रकृ-यां च तथा वृत्तं महांतनाम् ॥ R. 5, 81, 21. in der Astr. eine best. Strecke der Mondbahn und der Stand eines Planeten in derselben: प्राकृतविमि-श्रमन्तिस्तदीक्षणयोगात्तयोर्वापाद्याः । सप्त पराशरतले नन्त्रैः कीर्तिताः गतयः ॥ VARĀH. BRH. 7, 8. fgg. the diurnal motion of a planet in its orbit KĀLAS. 364 bei HAUGHT. — 4) Ausgang: प्राणापानगती रुद्धा BHAG. 4, 29. Ausgang, Gang einer Wunde, eines Geschwürs: गतयोऽन्योऽन्यसंबद्धा वाक्याप्लेक्ष्याः SUÇR. 2, 38, 15. स्रावगति 60, 14. दृषया गतिमन्विष्य 103, 6. 7. 104, 6. 122, 7. तैलं संशोधनं कन्यादत्तगता गतिम् 128, 3. = नाडीत्रण H. 470. MED. = वृद्धाण H. an. — 5) Ausgangspunkt, Ursprung, Grund: का साम्ना गतिरिति स्वर इति हेवाच स्वरस्य का गतिरिति प्राण इति हेवाच प्राणस्य का गतिरित्यत्रमिति हेवाच u. s. w. KĀND. UP. 1, 8, 4. 5. एवमाचारतो दृष्टा धर्मस्य मुनयो गतिम् M. 1, 110. स्थित्युत्पत्तिविनाशा-नां त्रामाङ्गः परमा गतिम् R. 6, 102, 29. का गतिर्दुःखस्य MUDR. 134, 15. — 6) Ausweg, Möglichkeit, Mittel, = उपाय und अभ्युपाय TRIK. H. an. MED. VAIG. KĀTHOP. 2, 8 (?). दण्डस्वगतिका गतिः JĀGĒ. 1, 345. गतिं पुत्रा न पश्यामि रत्नसाम् ich sehe nicht ein, wie dies den Rakshas mög-lich gewesen ist R. 1, 40, 12. क्व गतिर्मानुषाणां च धनुषो ऽस्य प्रपूर्णे 67, 10. अयत्र कस्यचिदुपक्रमस्य गतिः स्यात् MĀLAV. 44, 23. नास्त्यगतिर्म-नोरथानाम् VIKR. 26, 3. गतिमन्यामपश्यन् VID. 30. गत्यभावात् Sch. zu KĀTJ. ÇR. 1, 6, 14. अगत्या 5, 10. Sch. zu ÇAIM. 1, 2, 17. Kunstgriff, Strategem: गतीर्दश समापन्नौ प्रवर्तननिवर्तनैः R. 6, 92, 4. दर्शयित्वा ततस्तौ तु गतीर्व-क्तुविधा रणे 6. मायावी त्वं समर्थश्च गतिपुक्ता ऽथ बुद्धिमान् 3, 47, 14. — 7) Zuflucht: आत्मैव ह्यात्मनः सान्नी गतिरात्मा तयात्मनः M. 8, 84. BRĀH-MAH. 1, 25. त्वं हि नः परमा गतिः R. 1, 38, 4. गतिरेका पतिर्नार्या द्वितीया गतिरात्मज्ञः । तृतीया ज्ञातयो राजन् चतुर्थो नैव विद्यते ॥ 2, 61, 24. 72, 15. 88, 19. 3, 3, 2. 14, 13. 18, 33. 40, 1. 4, 8, 14. 27. 22, 14. DAÇ. 2, 9. प्रत्या-ख्यातो वसिष्ठेन गतिमन्याम् — गुरुपुत्रानृते सर्वान्नाहं पश्यामि कां च न विçv. 7, 20. 21. 8, 3. प्रत्याख्यातो भगवता गुरुपुत्रैस्तथैव हि । अन्यां गतिं गमिष्यामि 7. शेषे कार्ये भवान्गतिः R. 6, 6, 33. VET. 32, 8. — 8) Stellung, Lage (des Kindes bei der Geburt): गर्भस्य गतपश्चित्रा ज्ञापते ऽनिलको-पतः SUÇR. 2, 93, 6. 91, 17. — 9) Zustand, Lage, Verhältniss, Wesen, = दशा TRIK. H. an. MED. पुरुषान् परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः KĀ-THOP. 3, 11. गहना कर्मणो गतिः BHAG. 4, 17. शक्तिवैकल्यनमस्य u. s. w. तृणस्य च समा गतिः PAÑKĀT. 1, 119. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति चित्तस्य II, 139. अनिष्टादिष्टलाभे ऽपि न गतिर्ज्ञापते शुभा HIT. I, 5. नान्या गतिर्भवति वारिदं चातकस्य KĀT. 3. — 10) ein glücklicher Zustand, Glück: यद्य धर्मरतः स गतिं लभते MBh. 3, 17398. — 11) die Wanderung der Seele durch verschiedene Körper; die bei diesem Kreislauf dem Einzelnen angewiesene Stellung: उच्चावचेषु भूतेषु — संपश्येद्वर्तमानस्यात्तरात्मनः M. 6, 73. 1, 50. अवेनेत गतीनृणां कर्मदोषसमुद्भवाः 6, 61. कर्मज्ञा गतयो नृ-णामुत्तमाधममध्यमाः 12, 3, 23, 40. गौणिकी 41. तामसी 42 — 44. राजसी

45 — 47. साह्विकी 48 — 50. JĀGĒ. 3, 63. गतीनां मोक्ष उच्यते MBh. 13, 917. काङ्क्षगतिमनुत्तमाम् M. 2, 242. JĀGĒ. 1, 87. आत्मानं च परमेश्वरं गम-यत्युत्तमां गतिम् M. 5, 42. R. 3, 73, 42. प्राप्नोति परमां गतिम् M. 4, 14. 6, 88, 93. 96. 8, 420. 10, 130. 12, 116. JĀGĒ. 1, 265. BRAHMA-P. 49, 12. परां गतिम् BHAG. 6, 45. R. Einl. यवेष्टा गतिम् M. 12, 126. पितामहानां पूर्वेषां नाहं गतिमवाप्नुयाम् MBh. 2, 2301. सदाचारा भवानिव कथमेतो गतिं गतः KATHĀS. 2, 7. दिव्यो गतिं वररुचिः स निज्ञां प्रपेदे 5, 141. इमा वा वदन्ति राम तयोवलसमर्जिताम् । — रुनिष्यामीति मे मतिः R. 1, 76, 7. 15. 28, 11. गतिर्या कृता येन BRAHMA-P. 58, 10. इह हि मुक्तगतिर्देवगतिर्मनुष्यगति-स्तिर्यग्गतिर्नरकगतिरिति जीवानां पञ्च गतयो भवन्ति H. 20, Sch. — 12) Art und Weise VJUTP. 131. — 13) Kenntniss H. an. MED. Einsicht VJUTP. 28. 131. — 14) in der Gramm. die Präpositionen und bestimmte andere adverbialische Formen, wenn sie in unmittelbarem Bezug zu einem Verbalbegriff stehen, P. 1, 4, 60. fgg. 6, 2, 49. fgg. 139. 8, 1, 70. 71. — 15) eine best. hohe Zahl VJUTP. 180. 183. 185. — 16) der personif. Gang ist eine Tochter der Devahūti und Gemahlin Pulaha's VP. 53, N. 12.

गतितालिन् (von गति + तालि) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge von Skanda MBh. 9, 2569.

गतिमत् (von गति) adj. 1) mit Bewegung versehen, sich bewegend: भूतानि गतिमन्ति ध्रुवाणि च HARIV. 11794. MBh. 13, 5442. 13, 932. स हि धर्मनिधानं च गतिर्गतिमतो वरः R. 5, 89, 40. गिरिरिव गतिमान् VIKR. 44. — 2) mit Gängen (von Eiter u. s. w.) versehen, fistulosus: अन्तःपूषेधव-क्तेषु तथैवात्सङ्गवत्स्वपि । गतिमत्सु च रोगेषु भेदनं प्राप्तमुच्यते ॥ SUÇR. 2, 7, 2. — 3) mit einer Präposition u. s. w. (s. गति 14) versehen P. 2, 2, 18, VĀRTI. 12.

गतिता f. 1) Nichtverschiedensein unter einander (? परस्परमेद्) UN-
DIK. im ÇKDB. mutual separation WILS. — 2) N. pr. eines Flusses UN-
DIK. im ÇKDB.

गतीक (von गती = गति) in Verbindung mit dem आ priv. adj. f. आ
nicht gangbar: अगतीका गतिर्ह्येषा पापा राजापसेविनाम् MBh. 12, 3078.
292.

गवन् (von गम् s. पूर्वगवन्).

गैवर (wie eben) adj. beweglich, vergänglich P. 3, 2, 164. VOP. 26, 157.
वयो गवरम् ÇĀNTIÇ. 1, 20.

1. गद्, गैदामि (med. s. u. नि) DHĀTUP. 3, 15. 1) hersagen, aussprechen,
sprechen, sagen: सायं सायं सदा चेनं श्लोकमेकं जगद् R. MBh. 3, 2642. ग-
दामि वेदान् 13281. अथ जगद्गर्नीचैराशिषस्तस्य BHĀT. 1, 27. केतुं मे ग-
दतः प्रणु DRAUP. 9, 10. MBh. 3, 16650. जगादेदं वचो मनुः PAÑKĀT. 1, 339.
जगाद् वाक्यं कुरिराजसंनिधौ R. 4, 3, 31. एवंविधा गदतीनाम् — गिरः पु-
रयोषिताम् BHĀG. P. 1, 10, 31. द्विर्गदितं वचः 2, 9, 6. R. 5, 36, 97. तच्छ्रुत्वा
स्वरभेदेन — जगाद् PAÑKĀT. 199, 21. VID. 229. ÇUK. 43, 13. BHĀT. 3, 10.
zu Jmd (acc.) sagen: तं जगाद् VID. 30. 94. 112. 119. 188. 206. BHĀT. 3, 56.
8, 9. अगदीत् (nach P. 7, 2, 7 und VOP. 8, 49 auch अगदीत्) 13, 102. मुह्य-
त्तरदया । जगद् कुमारो RAGH. 6, 45. BHĀT. 5, 59. Etwas (acc.) zu Jmd
(acc.) sprechen: ततः समुत्तमम् — जगादेदं पुनर्वचः R. 2, 36, 1. 1, 58, 14.
BHĀT. 2, 32. अनुचरेण धनाधिपतेः — स जगदे वचनं प्रियम् KIR. 5, 16.
गदित n. das Reden, die Sprache H. Ç. 81. अन्तर्वाष्परोपरोधि गदितम्